भ्रष्टाचार का दहन जरूरी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति के गिरे हुए मूल्यों के पुनर्स्थापना के लिए पुनरूथान कार्यक्रम एक संजीवनी है। आधुनिक युग में समाज में कुछ ऐसी बुराईयां व्याप्त हो गयी है जिससे सामाजिक मूल्यों में गिरावट दिखाई दे रही है। भ्रष्टाचार भी एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो सर्वत्र व्याप्त है। आजकल लोग प्रायः कहते हैं कि भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। भ्रष्टाचार समाज को खोखला बना दे रहा है। भ्रष्टाचार का अर्थ है ऐसा आचरण जो सामाजिक मूल्यों के विरूद्ध है। भ्रष्टाचार अनैतिकता को जन्म देता है। यह एक ऐसी बुराई है समाज को धुंध की तरह पतन के गर्त में गिरा रही है। समाज से इसे निर्मूल निकाल देना चाहिए। सिंचन जड़ में दिया जाता है जब जड़ मजबूत रहती है तो वृक्ष अपने आप मजबूत बनता है। भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत गहरी है। इसका ताना–बाना ऊपर से नीचे तक सर्वत्र व्याप्त है। कोई भी अनैतिक कार्य भ्रष्टाचार कहलाता है। भारतीय संस्कृति आचार को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। यहां कहा गया है कि यदि धन नष्ट हो जाये तो कुछ नष्ट नहीं हुआ। यदि स्वास्थ्य कमजोर या नष्ट हो जाए तो कुछ नष्ट हुआ। किन्तु यदि चरित्र नष्ट हो जाए तो मानव की सम्पूर्ण पूंजी ही नष्ट हो गयी। हमारे देश में चरित्र को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। आचरण से जुड़ा हुआ वह कार्य जो पतन की ओर ले जाए वह भ्रष्टाचार है। मानव जीवन में चार पुरूषार्थ है– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसी के साथ–साथ ही जीवन को चार आश्रमों में भी बांटा गया है। ये आश्रम हैं ब्रहमचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। ब्रहमचर्य आश्रम में शिष्य गुरू के आश्रम में रहकर ज्ञान अर्जित करता है। गृहस्थ आश्रम में स्वदार संतोष के माध्यम से गृहस्थ धर्म का पालन करता है। वानप्रस्थ आश्रम में घर से विरक्त होने लगता है और संन्यास आश्रम में सब कुछ त्यागकर एकान्तवास करता है। यह भारतीय धर्म की एक परम्परा है। इसके द्वारा जीवन को चार भागों में बांट दिया गया था । हर धर्म के कर्म निश्चित कर दिये गये थे। किन्तु धीरे–धीरे यह सब व्यवस्थाऐं समाप्त होने लगी।

मानव के मन में धन प्राप्ति की इतनी अधिक लालसा हो गयी है कि किसी की हत्या करके भी यदि धन प्राप्त हो तो उसमें वह कोई संकोच नहीं करता है। सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार का ऐसा जाल फैला हुआ है कि उसमें फंस जाने के बाद व्यक्ति का प्राणांत हो जाता है। भ्रष्ट आचरण से लोग प्रभूत मात्रा में धन अर्जित कर रहे हैं। ऊॅची–ऊॅची अट्टालिकाएं बना रहे हैं। किन्तु जब कानूनी शिकंजा उनके ऊपर कसा जाता है तो उनकी कार्यप्रणाली सामने आती है। उनकी सम्पत्ति पर आयकर का छापा मारकर ऐसे लोगों को जेल के शिकंजों में ठूस दिया जाता है। सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों द्वारा भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जाता है। गरीब और अमीर के भेद की खाईं भ्रष्टाचार के कारण बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार की जड़े बहुत गहरी हैं। प्रायः हर जगह भ्रष्टाचार दिखाई दे रहा है। निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार, नौकरियों में भ्रष्टाचार और जहां भी जाईये वहीं भ्रष्टाचार का बोलबाला रहता है। सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ भ्रष्टाचार के कारण जनता को नहीं मिल पाता। पैसे का लेनदेन सर्वत्र चलता रहता है। ऐसी अवस्था में जनता का विश्वास सरकार पर से हट जाता है। यह अनुचित तरीका है। इसका दहन जरूरी है। भ्रष्टाचार को नष्ट करना सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। जिस देश और समाज में भ्रष्टाचार रहता है वह देश और समाज कलंकित हो जाता है।

भ्रष्टाचार दूर करने के लिए नैतिकता आवश्यक है। नैतिक आचरण से आत्म सुख प्राप्त होता है। नैतिक व्यक्ति निडर होता है। उसको किसी से भय नहीं लगता। उसके जीवन में प्रामाणिकता रहती है। जो अनैतिक आचरण करता है धीरे–धीरे उसका पतन होता जाता है। जो दूसरे के लिए कूंआ खोदता है, ईश्वर उसके लिए पहले से ही कूंआ खोदकर उसको गिरा भी देते है। अनैतिक आचरण करने वाला व्यक्ति अपने बूरे कर्मों के परिणामस्वरूप नरकगामी होता है। धोखाधड़ी, माप–तोल में कमी करना, बेईमानी करना आदि कार्य अनैतिक आचरण के कार्य है। जब ईश्वर ने जीविकोपार्जन के नैतिक मार्ग बना रखे हैं तो अनैतिक आचरण करके लोक और परलोक को दूषित नहीं करना चाहिए।

नैतिकता वह मूल्य है जो समाज के द्वारा स्थापित किया जाता है। नैतिक व्यक्ति धार्मिक और उदार होता है। समाज, राज्य, देश और पूरे विश्व पर नैतिकतला लागू होती है। आज के युग

में शोषण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अनैतिकता और शोषण का परिणाम हमें ही मिलता है। नैतिक व्यक्ति ईमानदार होता है, उसके जीवन में सर्वत्र, सदाचार और मूल्यों का महत्व रहता है। नैतिकता से कमाया गया धन स्थायी रहता है। जो दूकानदार जीवन में नैतिकता और प्रामाणिकता को महत्व देता है उसकी तरफ ग्राहक भी आकर्षित होते है। ग्राहकों को यह विश्वास होता है कि इस दूकान से लिया गया समान प्रामाणिक है। अनैतिकता से कमाया गया धन नष्ट होने के साथ ही साथ परिवार को भी नष्ट कर देता है। जीवन में तीन चीजें बहुत महत्वपूर्ण है– वृत्ति, प्रवृत्ति और प्रकृति। वृत्ति का अर्थ है हम प्रतिदिन जैसा आचरण करते हैं वह वृत्ति है। जब हम बार–बार वही करते है तो वह हमारी प्रवृत्ति बन जाती है। धीरे–धीरे प्रवृत्ति ही हमारी प्रकृति बन जाती है।